सम-सामयिक
घटना चक्र
परीक्षा संवाद के 29 वर्ष

# 2023

www.ssgcp.com
t.me/ssgcp
ssgc.gs.qa
ssghatnachakra
SamsamyikGhatna

# संक्षिप्त सामान्य ज्ञान GK

ई-बुक पढ़ें
अपडेटेड रहें
देखें कवर पृष्ठ - 2

CASH BACK ₹40

Validity upto September, 2023

See Cover Page - 2

सभी प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं हेतु बहुउपयोगी, सारगर्भित
सामान्य ज्ञान की पुस्तक

© प्रकाशकाधीन :
संस्करण - द्वितीय
संस्करण वर्ष- 2022
ले.- SSGC
मूल्य : 100/-
मुद्रक - कोर पब्लिशिंग सोल्यूशन
मुद्रण क्रम - प्रथम

संपर्क-
**सम-सामयिक घटना चक्र**
188A/128 एलनगंज, चर्चलेन
प्रयागराज (इलाहाबाद) - 211002

Ph.: 0532-2465524, 2465525
Mob.: 9335140296
e-mail : ssgcald@yahoo.co.in
Website : ssgcp.com
e-shop Website : shop.ssgcp.com

■ इस प्रकाशन के किसी भी अंश का पुनः प्रस्तुतीकरण या किसी भी रूप में प्रतिलिपिकरण (फोटोप्रति या किसी भी माध्यम में ग्राफिक्स के रूप में संग्रहण, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिकीकरण द्वारा जहां कहीं या अस्थायी रूप से या किसी अन्य प्रकार के प्रसंगवश इस प्रकाशन का उपयोग भी) कॉपीराइट के स्वामित्व धारक के लिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

किसी भी प्रकार से इसके भंग होने या अनुमति न लेने की स्थिति में बिना किसी पूर्व सूचना के उन पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

*इस प्रकाशन से संबंधित सभी विवादों का निपटारा न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज (इलाहाबाद) के न्यायालय न्यायाधिकरण के अधीन होगा।

संकलन सहयोग-
- **सुधाकर तिवारी**
- **उमेश प्रताप सिंह**
- **बालमुकुन्द तिवारी**
- **शिव शंकर तिवारी**
- **राजकुमार श्रीवास्तव**
- **अभिषेक कुमार**
- **विनोद कुमार त्रिपाठी**
- **फैज़ुल इस्लाम अंसारी**
- **मोहम्मद ताहिर**

# समारंभ

**एक जागरूक व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने परिवेश से परिचित हो, ताकि आने वाले कल में वह सक्षम बन सके। 'सामान्य ज्ञान'** हासिल करने का अर्थ है विस्तृत विषय क्षेत्रों की साधारण जानकारियों से अवगत होना।

सामान्य ज्ञान शाश्वत नहीं है, इसमें भी बदलाव होता रहता है, उदाहरण के लिए वर्तमान में भारत में 28 राज्य और 8 केंद्रशासित प्रदेश हैं। तेलंगाना के गठन के पश्चात भारत में राज्यों की संख्या 29 तथा केंद्रशासित प्रदेशों की संख्या 7 हो गई थी, परंतु जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 के लागू होने के उपरांत भारत में राज्यों की संख्या 28 तथा केंद्रशासित प्रदेशों की संख्या 9 हो गई। तदुपरांत दादरा और नागर हवेली तथा दमन और दीव अधिनियम, 2019 के तहत दो केंद्रशासित प्रदेशों यथा 1. दादरा और नागर हवेली तथा 2. दमन और दीव का आपस में विलय हो जाने के उपरांत केंद्रशासित प्रदेशों की संख्या पुनः घटकर 8 हो गई।

इसी प्रकार सिक्किम राज्य की स्थापना की तिथि अनेक पुस्तकों में 26 अप्रैल, 1975 दर्शाई गयी है, जबकि सिक्किम राज्य की आधिकारिक वेबसाइट पर इसे 16 मई, 1975 बताया गया है। सही तथ्य तक पहुंचने के लिए सम्यक स्रोत तक पहुंचकर जानकारी हासिल करना भी सामान्य ज्ञान का ही हिस्सा है। सामान्य ज्ञान की प्रस्तुत पुस्तक में हमने यही कोशिश की है कि प्रत्येक तथ्य के अद्यतन संदर्भों से अवगत रहा जाए और जानकारी के लिए सम्यक आधिकारिक स्रोतों तक पहुंचा जाए।

अपने पाठकों को महत्वपूर्ण, परीक्षोपयोगी एवं विश्वसनीय सामान्य ज्ञान का संक्षिप्त संस्करण उपलब्ध करा रहें हैं, ताकि पाठक शीघ्रता से इसे कंठस्थ कर सकें।

# अनुक्रमणिका


## भारत का इतिहास 5-67

**A. प्राचीन भारत का इतिहास :** • प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोत • इतिहास का विभाजन • ताम्र पाषाण काल • वैदिक संस्कृति • छठी शताब्दी ई.पू. में धार्मिक आंदोलन • मगध राज्य का उत्कर्ष • भारत में विदेशी आक्रमण • गुप्त साम्राज्य • वाकाटक राजवंश • वर्धन वंश • दक्षिण भारत का इतिहास • पूर्व-मध्यकाल • सीमावर्ती राज्य

**B. मध्यकालीन भारत का इतिहास :** • अरबों का आक्रमण • सल्तनत काल • गुलाम वंश • खिलजी वंश • तुगलक वंश • सैय्यद वंश • लोदी वंश • दिल्ली सल्तनत-शासन व्यवस्था • विजयनगर साम्राज्य • बहमनी राज्य • स्वतंत्र प्रांतीय राज्य • भक्ति आंदोलन • मुगल साम्राज्य • मुगल शासन व्यवस्था • मराठों का उत्कर्ष

**C. आधुनिक भारत का इतिहास :** • मुगल साम्राज्य का पतन और विघटन • यूरोपीय कंपनियों का आगमन • बंगाल में अंग्रेजी शक्ति का उदय • पेशवाओं के अधीन मराठा साम्राज्य और आंग्ल मराठा संघर्ष • सिख एवं अंग्रेज संबंध • 1857 ई. का विद्रोह • धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन • भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन • भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित महत्वपूर्ण संगठन एवं संस्थाएं • ब्रिटिश भारत में शिक्षा का विकास • भारतीय समाचार-पत्रों का इतिहास • ब्रिटिश कालीन आयोग/समितियां • कांग्रेस अधिवेशन और उनके प्रमुख तथ्य • भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के महत्वपूर्ण तथ्य • भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास से संबंधित महत्वपूर्ण आंदोलन एवं घटनाएं • भारत के गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय एवं उनके महत्वपूर्ण कार्य • 1947 ई. से 1964 ई. तक का इतिहास • अन्य प्रमुख ऐतिहासिक तथ्य

**D. विश्व का इतिहास :** • पुनर्जागरण • अमेरिकी क्रांति अथवा स्वतंत्रता संग्राम • फ्रांस की क्रांति • इटली का एकीकरण • जर्मनी का एकीकरण • रूसी क्रांति • औद्योगिक क्रांति • प्रथम विश्व युद्ध • जर्मनी में राष्ट्रवाद, नाजीवाद • इटली में फासिज्म का उदय • जापानी साम्राज्यवाद • द्वितीय विश्व युद्ध • तुर्की • विविध तथ्य

## भारतीय राजव्यवस्था 68-88

• भारत का संवैधानिक विकास • संविधान के स्रोत • संविधान की प्रस्तावना • अनुसूची • भारत संघ और उसके राज्य क्षेत्र • नागरिकता • मौलिक अधिकार • राज्य के नीति-निदेशक तत्व • मौलिक कर्तव्य • संघीय कार्यपालिका • संसद • उच्चतम न्यायालय • उच्च न्यायालय • महान्यायवादी एवं महाधिवक्ता • नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक • राज्य की कार्यपालिका • राज्य विधायिका • भारत के राष्ट्रीय चिह्न • पंचायती राज • नगरपालिकाएं • लोक सेवा आयोग • निर्वाचन आयोग • प्रमुख संशोधन

## भूगोल 89-137

**विश्व का भूगोल :** • ब्रह्माण्ड • सौरमण्डल • पृथ्वी की आंतरिक संरचना • स्थलमण्डल • चट्टान, ज्वालामुखी, भूकंप, पर्वत, महाद्वीप और प्रमुख प्रायद्वीप • वायुमण्डल • जलमण्डल

**भारत का भूगोल :** • सामान्य परिचय • भारत एवं पड़ोसी देश • भारत का भौतिक स्वरूप • अपवाह तंत्र • भारत की प्रमुख झीलें और जलप्रपात • भारत की जलवायु • भारत की मिट्टी • भारत की कृषि • सिंचाई और बहुउद्देशीय परियोजनाएं • भारतीय खनिज संसाधन • भारत में परिवहन • भारत के उद्योग • भारत के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य • भारत की जनजातियां • भारत और अंटार्कटिका

## भारत की जनगणना 138-141

## भारतीय अर्थव्यवस्था 142-165

• अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण • भारत में नियोजन • गरीबी • कृषि • सार्वजनिक उद्यम • बैंकिंग • मौद्रिक नीति • लोकवित्त • आर्थिक समीक्षा • वित्त आयोग • कर प्रणाली • विविध

## सामान्य विज्ञान 166-199

**A. भौतिक विज्ञान :** • मात्रक • भौतिक राशियों की विमाएं • गति • बल • कार्य, सामर्थ्य एवं ऊर्जा • गुरुत्वाकर्षण • पृष्ठ तनाव • दाब • तरंग • ध्वनि • ऊष्मा • प्रकाश • विज्ञान की प्रमुख शाखाएं

**B. रसायन विज्ञान :** • प्रमुख तत्व • यौगिक • बहुलक • विशेष तथ्य

**C. जीव विज्ञान :** • जीव विज्ञान की उपशाखाएं • कोशिका विज्ञान • आनुवंशिकी;

**D. वनस्पति विज्ञान :** • पादप • पारिस्थितिक - तंत्र • पाचन • परिसंचरण तंत्र • तंत्रिका तंत्र • पोषक तत्व • रोग

## विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 200-204

• भारतीय परमाणु अनुसंधान • भारतीय रक्षा प्रौद्योगिकी • भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम

## कंप्यूटर 205-208

## खेल 209-218

• ओलंपिक खेल, • राष्ट्रमण्डल खेल • एशियाई खेल • क्रिकेट • हॉकी • फुटबॉल • बैडमिंटन • टेनिस • शतरंज • एथलेटिक्स • टेबल टेनिस • बास्केटबॉल • पोलो • गोल्फ • बेसबॉल • बिलियर्ड्स • कुश्ती • वॉटर पोलो • तैराकी • मुक्केबाजी • निशानेबाजी • वालीबॉल • कबड्डी • खो-खो • हैंडबॉल • खेलों से संबंधित पुरस्कार

## विविध 219-256

• कला एवं नृत्य • राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय दिवस • भारतीय आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था • अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान • राष्ट्रीय पुरस्कार एवं सम्मान • अंतरराष्ट्रीय संगठन • विश्व के प्रमुख संगठन

# भारत का इतिहास
# (Indian History)

## इतिहास

इतिहास शब्द (इति + ह + आस से मिलकर बना है), जिसका तात्पर्य है-**'यह निश्चय था'**। ग्रीस के लोग इतिहास के लिए **'इस्तोरिआ'** (Istoria) शब्द का प्रयोग करते थे, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है **'बुनना'**। हिस्ट्री (History) शब्द का प्रयोग हेरोडोटस ने सर्वप्रथम अपनी पुस्तक **'हिस्टोरिका'** में किया था। इसलिए हेरोडोटस को **'इतिहास का जनक'** माना जाता है।

अध्ययन की सुविधा के लिए इतिहास को तीन भागों- A. प्राचीन काल, B. मध्यकाल और C. आधुनिक काल में बांटा गया है।

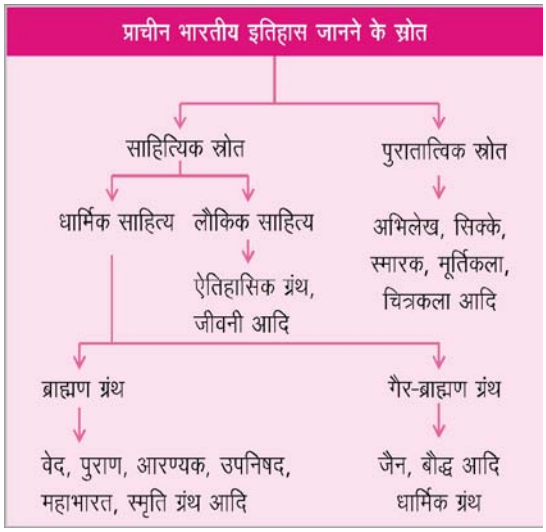


## साहित्यिक स्रोत

### ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण ग्रंथ प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

### वेद

- ब्राह्मण साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद हैं। वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।
- वेदों की संख्या **चार** है।

### ब्राह्मण ग्रंथ

- ब्राह्मण ग्रंथों की रचना संहिताओं की व्याख्या हेतु सरल गद्य में की गई है।
- ब्रह्म का अर्थ है- **यज्ञ**। अतः यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ **'ब्राह्मण'** कहलाते हैं। प्रत्येक वेद के लिए अलग-अलग ब्राह्मण ग्रंथ हैं।

### आरण्यक

- आरण्यक ब्राह्मण ग्रंथ के अंतिम भाग हैं, जिसमें दार्शनिक एवं रहस्यात्मक विषयों का वर्णन किया गया है।
- जंगल में पढ़े जाने के कारण इन्हें **'आरण्यक'** कहा जाता है।
- कुल **सात** आरण्यक उपलब्ध हैं।

### उपनिषद

- 'उप' का अर्थ है 'समीप', 'नि' का अर्थ 'निष्ठापूर्वक' और 'सद' का अर्थ है 'बैठना'। अर्थात जिस रहस्य विद्या का ज्ञान गुरु के समीप बैठकर प्राप्त किया जाता है, उसे **'उपनिषद'** कहते हैं।
- वैदिक साहित्य के अंतिम भाग होने के कारण इन्हें **'वेदांत'** भी कहा जाता है।
- उपनिषदों में हमें आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' **मुंडकोपनिषद** से उद्धृत है।
- उपनिषदों की **संख्या 108** है।

### वेदांग

- वेदांग की संख्या छः है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष एवं छंद।

## सूत्र

- वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सूत्र साहित्य का प्रणयन हुआ।
- सूत्र ग्रंथ **'कल्प'** नामक वेदांग से निकले हैं।
- कल्प का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है-
  1. श्रौत सूत्र - यज्ञ संबंधी नियम
  2. गृह्य सूत्र - लौकिक एवं पारलौकिक कर्तव्यों का वर्णन
  3. धर्म सूत्र - धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कर्तव्यों का उल्लेख
- धर्म सूत्र से ही स्मृति ग्रंथों का विकास हुआ।
- प्रमुख स्मृति ग्रंथ हैं - मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, पाराशर स्मृति, नारद स्मृति, बृहस्पति स्मृति आदि।
- **मनु स्मृति** सबसे प्राचीन तथा प्रामाणिक मानी जाती है।
- **मनु स्मृति** के भाष्यकार (टीकाकार) हैं- **मेघातिथि, गोविंदराज, भारुचि** एवं **कुल्लूक भट्ट**।
- याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार हैं- **विश्वरूप, विज्ञानेश्वर** तथा **अपरार्क**।
- व्याकरण ग्रंथों में सबसे महत्वपूर्ण पाणिनी कृत **'अष्टाध्यायी'** है।

## पुराण

- पुराणों की संख्या **18** है।
- पुराणों के रचयिता **लोमहर्ष** अथवा उनके पुत्र **उग्रश्रवा** थे।
- पुराणों में भविष्यत काल शैली में कलियुग के राजाओं का विवरण मिलता है।
- मत्स्य पुराण सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक है।

## महाकाव्य

- वैदिक साहित्य के बाद धार्मिक साहित्य में **'रामायण'** और **'महाभारत'** नामक दो महाकाव्य महत्वपूर्ण हैं।
- रामायण की रचना **महर्षि वाल्मीकि** ने की थी।
- महाभारत की रचना **महर्षि वेद व्यास** ने की थी।
- महाभारत में एक लाख श्लोक हैं, जिसके कारण इसे **'शतसहस्त्रसंहिता'** कहा जाता है।
- महाकाव्यों से प्राचीन भारतवर्ष की सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक दशा की जानकारी मिलती है।

## ii. ब्राह्मणेत्तर साहित्य

### बौद्ध साहित्य

- सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ **'त्रिपिटक'** हैं। इनके नाम हैं- सुत्तपिटक, विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक।
- सुत्त पिटक को बौद्ध धर्म का **'इनसाइक्लोपीडिया'** भी कहा जाता है।
- जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाएं हैं।
- प्राचीन बौद्ध ग्रंथ **पालि भाषा** में है।
- दीपवंश एवं महावंश से मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।
- संस्कृत में लिखित महावस्तु एवं ललित विस्तार से महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्र मिलता है।

### जैन साहित्य

- जैन साहित्य को **'आगम'** कहा जाता है।
- भगवती सूत्र में महावीर के जीवन पर प्रकाश पड़ता है।
- जैन धर्म का प्रारंभिक इतिहास **'कल्प सूत्र'** से ज्ञात होता है। कल्प सूत्र की रचना भद्रबाहु ने की थी।
- जैन ग्रंथों की रचना **प्राकृत भाषा** में हुई थी।
- सबसे महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ हेमचंद्र कृत **'परिशिष्टपर्वन'** है।
- जैन ग्रंथों का संकलन अंतिम रूप से छठी सदी में गुजरात के वल्लभी नगर में हुआ।

### लौकिक साहित्य

- लौकिक साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रंथ, विदेशी विवरण एवं जीवनियों को रखा जाता है।
- ऐतिहासिक रचनाओं में कौटिल्य के **अर्थशास्त्र** का महत्वपूर्ण स्थान है।
- 'अर्थशास्त्र' को भारत का पहला राजनीतिक ग्रंथ माना जाता है।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीतिक ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

- इसके अतिरिक्त **विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, सोमदेव कृत कथासरित्सागर, क्षेमेंद्र कृत वृहत्कथामंजरी** भी महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
- कल्हण द्वारा रचित **'राजतरंगिणी'** से ग्यारहवीं शताब्दी तक कश्मीर का इतिहास ज्ञात होता है।

## विदेशी यात्रियों का विवरण

### यूनानी - रोमन लेखक

- हेरोडोटस की पुस्तक हिस्टोरिका से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के भारत और फारस के संबंधों का उल्लेख मिलता है।
- सिकंदर के समकालीन **नियार्कस, आनेसिक्रिटस** एवं **अरिस्टोबुलस** के विवरण अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय हैं।
- सिकंदर के बाद के लेखकों में तीन राजदूतों- मेगस्थनीज, डाइमेकस तथा डायोनीसियस उल्लेखनीय हैं।
- सेल्युकस निकेटर का राजदूत **मेगस्थनीज** चंद्रगुप्त मौर्य के राज दरबार में आया था। मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक **'इंडिका'** में मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति का वर्णन किया है।
- **डाइमेकस** सीरियन नरेश **अन्टियोकस** का राजदूत था, जो बिंदुसार के राज दरबार में आया था।
- डायोनीसियस मिस्र नरेश टॉलमी फिलाडेल्फस का राजदूत था, जो अशोक के राज दरबार में आया था।
- टॉलमी ने दूसरी शताब्दी में **'ज्योग्राफी'** नामक पुस्तक लिखी।
- प्लिनी ने प्रथम शताब्दी में **'नेचुरल हिस्ट्री'** नामक पुस्तक लिखी।
- नेचुरल हिस्ट्री में पेड़-पौधों, खनिज पदार्थों, भारतीय पशुओं आदि का उल्लेख मिलता है।
- **'पेरीप्लस ऑफ द इरिथ्रियन सी'** नामक पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी नहीं है। इसका लेखक पहली शताब्दी में हिंद महासागर की यात्रा पर आया था। इसने उस समय के भारतीय बंदरगाहों तथा व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी दी है।

### चीनी लेखक

- **फाह्यान** पांचवीं सदी में चंद्रगुप्त द्वितीय के समय भारत आया था। उसने तत्कालीन मध्य भारत की सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।
- ह्वेनसांग सातवीं सदी में हर्ष के शासनकाल में भारत आया था। वह भारत में 16 वर्षों तक रहा। 6 वर्षों तक उसने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया।
- ह्वेनसांग की भारत यात्रा का वृत्तांत **'सी-यू-की'** नाम से जाना जाता है।
- ह्वेनसांग को **'प्रिंस ऑफ पिल्ग्रिम्स'** अथवा **'यात्रियों का राजकुमार'** कहा जाता है।
- **इत्सिंग** सातवीं सदी के अंत में भारत आया था। उसने विक्रमशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों एवं भारतीयों की वेशभूषा तथा खान-पान आदि के विषय में लिखा है।
- **मा-त्वान-लिन** ने हर्ष के पूर्वी अभियानों तथा **चाऊ-जू-कुआ** ने चोल कालीन इतिहास पर प्रकाश डाला है।
- चीनी यात्री **सुंगयुन** 518 ई. में भारत आया था।

### अरबी लेखक

- अल्बरूनी 11वीं सदी में महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। उसने **'तहकीक-ए-हिंद'** अथवा **'किताब-उल-हिंद'** नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें राजपूत कालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज आदि का विस्तृत वर्णन है।
- अल्बरूनी ज्योतिष, गणित, विज्ञान, अरबी, फारसी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञाता था।
- 9वीं सदी में भारत आने वाले अरबी यात्री **सुलेमान** ने पाल एवं प्रतिहार शासकों के तत्कालीन आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक दशा का वर्णन किया है।

- बगदाद से भारत की यात्रा पर आने वाले **अल-मसूदी** ने राष्ट्रकूट एवं प्रतिहार शासकों के विषय में जानकारी दी है।

## अन्य विदेशी लेखक

- **इब्नबतूता** द्वारा अरबी भाषा में लिखा गया उसका यात्रा वृत्तांत **'रेहला'** है।
- यह 14वीं सदी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत है।
- **तारानाथ** एक तिब्बती लेखक था। इसने **'कंग्यूर'** तथा **'तंग्यूर'** नामक ग्रंथ की रचना की।
- **मार्को पोलो** 13वीं सदी के अंत में पाण्ड्य देश की यात्रा पर आया था।

# पुरातात्विक स्रोत

- प्राचीन भारत के अध्ययन के लिए पुरातात्विक सामग्रियां सर्वाधिक प्रामाणिक हैं। इसके अंतर्गत मुख्यतः अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियां तथा चित्रकला आदि आते हैं।

## अभिलेख

- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया माइनर के **बोगजकोई** नामक स्थान से लगभग 1400 ई.पू. का मिला है।
- बोगजकोई अभिलेख में **इंद्र, मित्र, वरुण** तथा **नासत्य** (अश्विन) वैदिक देवताओं का उल्लेख है।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख **अशोक** के हैं, जो लगभग तीसरी शताब्दी ई. पू. के हैं।
- **मास्की, गुर्जरा, निट्टूर** एवं **उडेगोलम** से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
- अशोक के अभिलेख मुख्यतः **ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी** तथा **अरामेइक** लिपियों में मिले हैं।
- यवन राजदूत **हेलियोडोरस** के **बेसनगर** (विदिशा, मध्य प्रदेश) से प्राप्त गरुण स्तंभ लेख से भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिले हैं।
- **मंदसौर अभिलेख** से रेशम बुनकर श्रेणियों का उल्लेख मिलता है।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में **जेम्स प्रिंसेप** ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।
- अभिलेखों का अध्ययन **'इपीग्राफी'** कहलाता है।
- सती प्रथा का प्रथम साक्ष्य 510 ई. के **भानुगुप्त के एरण अभिलेख** से मिलता है।

**स्मरणीय अभिलेख**

| अभिलेख | शासक |
|---|---|
| हाथीगुम्फा अभिलेख | कलिंग राजा खारवेल |
| जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख | रुद्रदामन |
| नासिक अभिलेख | गौतमी बलश्री |
| प्रयाग प्रशस्ति | समुद्रगुप्त |
| मंदसौर अभिलेख | मालवा नरेश यशोवर्मन |
| ऐहोल अभिलेख | पुलकेशिन द्वितीय |
| ग्वालियर अभिलेख | प्रतिहार नरेश भोज |
| भितरी तथा जूनागढ़ अभिलेख | स्कंदगुप्त |
| देवपाड़ा अभिलेख | बंगाल शासक विजयसेन |

### सिक्के

- सिक्कों का अध्ययन **'न्यूमिस्मेटिक्स'** कहलाता है।
- प्राचीन काल में सिक्के तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनाए जाते थे।
- भारत के प्राचीनतम सिक्के **'आहत'** सिक्के हैं, जो ई.पू. पांचवीं सदी के हैं। ठप्पा मारकर बनाए जाने के कारण भारतीय भाषाओं में इन्हें 'आहत' मुद्रा कहते हैं।
- सातवाहनों ने सीसे के तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किए।
- सर्वप्रथम लेख वाले स्वर्ण सिक्के हिंद-यूनानी (इंडो-ग्रीक) शासकों ने चलाए।

### मूर्तियां, स्मारक एवं भवन तथा चित्रकला

- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।
- महलों एवं मंदिरों की शैली से वास्तुकला के विकास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
- अजंता, एलोरा आदि के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है।

## इतिहास का विभाजन

- प्राचीन भारतीय इतिहास की विशद सामग्री को समझने योग्य बनाने के लिए इतिहासकारों ने इसे तीन भागों में बांटा है-
  - A. प्रागैतिहासिक काल
  - B. आद्य-ऐतिहासिक काल
  - C. ऐतिहासिक काल

### प्रागैतिहासिक काल

- इस काल का इतिहास पूर्णतः पुरातात्विक साक्ष्यों से ही ज्ञात होता है, क्योंकि इस काल का कोई लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।
- मानव सभ्यता के इस प्रारंभिक काल को सुविधानुसार तीन भागों में बांटा गया है-
  - i. पुरापाषाण काल
  - ii. मध्यपाषाण काल
  - iii. नवपाषाण काल
- **भीमबेटका** के गुफा चित्र पुरापाषाण कालीन हैं।
- पहिए का प्रयोग **नवपाषाण काल** में हुआ था।
- कृषि का आविष्कार **नवपाषाण काल** में हुआ।
- मानव द्वारा आग का सर्वप्रथम प्रयोग **नवपाषाण काल** में किया गया था।
- लहुरादेव से कृषि के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं।
- पशुपालन का प्रारंभ मध्यपाषाण काल में हुआ।
- पशुपालन के साक्ष्य भारत में **आदमगढ़** (होशंगाबाद, म.प्र.) तथा **बागोर** (भीलवाड़ा, राजस्थान) से प्राप्त हुए हैं।
- मध्यपाषाण कालीन **महदहा** (प्रतापगढ़, उ.प्र.) से हड्डी एवं सींग से निर्मित उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- मानव कंकाल के साथ कुत्ते का कंकाल **बुर्जहोम** (जम्मू-कश्मीर) से प्राप्त हुआ।
- गर्तावास के साक्ष्य भी **बुर्जहोम** से प्राप्त हुए हैं।

### आद्य ऐतिहासिक काल

- इस काल में लेखन कला का विकास तो हो चुका था, किंतु इस काल की लिपि को पढ़ने में अभी सफलता नहीं मिल सकी है।
- हड़प्पा सभ्यता को इस काल में रखा जाता है।
- गैरिक एवं कृष्ण लोहित मृदभांड संस्कृति इसी काल से संबंधित हैं।

### ऐतिहासिक काल

- इस काल की जानकारी हेतु साहित्यिक एवं पुरातात्विक तथा विदेशी लेखकों के वर्णन मुख्य स्रोत हैं।

## ताम्र-पाषाण काल

- जिस काल में मनुष्य ने पत्थर एवं तांबे के औजारों का साथ-साथ प्रयोग किया, उस काल को **'ताम्र-पाषाणिक'** काल अथवा **'कैल्कोलिथिक'** काल कहा जाता है।
- सर्वप्रथम तांबा धातु का प्रयोग औजारों को बनाने में किया गया।
- भारत में ताम्र-पाषाण अवस्था के मुख्य क्षेत्र दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (अहाड़ एवं गिलुंद), पश्चिमी मध्य प्रदेश (मालवा, कायथा और एरण), पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिणी-पूर्वी भारत है।

- मालवा मृदभांड ताम्र-पाषाण मृदभांडों में उत्कृष्टतम् माने गए हैं।
- जोर्वे स्थलों में सबसे बड़ा दैमाबाद है।
- अहाड़ का प्राचीन नाम **'तांबवती'** अर्थात 'तांबावाली जगह' है।
- कायथा के मृदभाण्डों पर प्राक्-हड़प्पन, हड़प्पन और हड़प्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।
- सभी ताम्र-पाषाण समुदाय चाकों पर बने **काले व लाल मृदभाण्डों** का प्रयोग करते थे।

**नोट -** मानव द्वारा क्रमशः तांबा, कांसा और लोहा धातुओं का प्रयोग किया गया।

## सिंधु (हड़प्पा) सभ्यता

- सिंधु सभ्यता आद्य-ऐतिहासिक सभ्यता है।
- सिंधु सभ्यता का प्रौढ़ काल **2600** से **1700 ई.पू.** तक माना गया है।
- काले रंग की आकृतियों से **चित्रित लाल मृदभाण्ड** हड़प्पा सभ्यता की विशेषता है।

**नोट** - सिंधु सभ्यता का सर्वाधिक पूर्वी पुरास्थल हिंडन नदी के किनारे **आलमगीरपुर** (जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश), पश्चिमी पुरास्थल दाश्क नदी के किनारे स्थित **सुत्कागेनडोर** (बलूचिस्तान), उत्तरी पुरास्थल चिनाब नदी के तट पर अखनूर के निकट **मांडा** (जम्मू-कश्मीर) तथा दक्षिणी पुरास्थल गोदावरी नदी के तट पर दैमाबाद (जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र) है।

- सिंधु सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।
- सिंधु सभ्यता से परिपक्व अवस्था में प्राप्त होने वाले बड़े नगर **मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, राखीगढ़ी, धौलावीरा, कालीबंगा** हैं।
- भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हड़प्पा सभ्यता के सर्वाधिक पुरास्थलों का उत्खनन गुजरात में किया गया है।
- सिंधु वासियों को **तांबा, कांसा, स्वर्ण** और **चांदी** के विषय में जानकारी थी।
- लोथल से **गोदीबाड़ा** के साक्ष्य मिले हैं।
- हरियाणा के बनावली से **पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति** मिली है।
- सैंधव सभ्यता के **विशाल स्नानागार** का साक्ष्य मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुआ है।
- राजस्थान के कालीबंगा से **जुते हुए खेत** के साक्ष्य मिले हैं।
- सैंधव सभ्यता **कांस्ययुगीन** सभ्यता थी तथा यहां के लोग लोहे से परिचित नहीं थे।
- राखीगढ़ी हरियाणा के हिसार जिले में घग्गर नदी के पास स्थित है।
- सिंधु घाटी के लोग **पशुपति शिव** की भी पूजा करते थे। इसका प्रमाण मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर है, जिस पर योगी की आकृति बनी है।
- उस योगी के दाईं ओर बाघ और हाथी तथा बाईं ओर गैंडा एवं भैंसा चित्रित किए गए हैं।
- मार्शल महोदय ने इसे 'रुद्र शिव' से संबंधित किया है।

**नोट-** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देश पर वर्ष 1921 में **दयाराम साहनी** ने पंजाब (पाकिस्तान) के तत्कालीन मांटगोमरी जिले में रावी नदी के बाएं तट पर स्थित हड़प्पा के टीले का सर्वेक्षण करवाया।

- वर्ष 1922 में **राखालदास बनर्जी** ने सिंध प्रांत के लरकाना जिले में सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित मोहनजोदड़ो के टीलों का पता लगाया।
- मोहनजोदड़ो (मुअन-जो-दारो) का शाब्दिक अर्थ है - **'मृतकों का टीला'**।
- वस्त्रों के लिए **कपास** का उत्पादन सर्वप्रथम भारत में किया गया।
- सिंधु घाटी में कपास के उत्पादन का प्रमाण मिला है।
- मोहनजोदड़ो से **सूती वस्त्र** के साक्ष्य की प्राप्ति हुई है।
- मोहनजोदड़ो से **कूबड़ वाले बैल** की आकृति वाली मुहरें प्राप्त हुई हैं।

- सिंधु सभ्यता की मुहरों पर सर्वाधिक अंकन **एक शृंगी पशु** का है, उसके बाद कूबड़ वाले बैल का अंकन है।
- मोहनजोदड़ो से **कांसे की नर्तकी** की मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसका आकार 10.5 ´ 5 ´ 2.5 सेमी. है।
- **वक्राकार ईंटें** चन्हूदड़ो से मिली हैं।
- लोथल एवं कालीबंगा से **अग्निकुंड** प्राप्त हुए हैं।
- मोहनजोदड़ो से एक **वृहदस्नानागार** प्राप्त हुआ है, जिसके मध्य स्थित स्नानकुंड कि लंबाई 11.88 मी., चौड़ाई 7.01 मी. एवं गहराई 2.43 मी. है।
- लोथल एवं चन्हूदड़ो से **मनके बनाने के कारखाने** मिले हैं।
- सिंधु सभ्यता की **लिपि भावचित्रात्मक** है।
- सिंधु सभ्यता के वासियों ने नगरों तथा घरों के विन्यास के लिए **ग्रिड पद्धति** अपनाई।

**सिंधु सभ्यता के पतन का कारण एवं उनके मानने वाले विद्वान**

| कारण | विद्वान |
|---|---|
| जलवायु परिवर्तन | आरेल स्टाइन |
| भूतात्विक परिवर्तन | एम.आर. साहनी |
| प्राकृतिक आपदा | कैनेडी |
| बाढ़ | मैके एवं मार्शल |
| आर्यों का आक्रमण | गार्डन चाइल्ड एवं ह्वीलर |
| प्रशासनिक शिथिलता | जॉन मार्शल |

**हड़प्पा कालीन नदियों के किनारे बसे नगर**

| नाम | | नदी | नाम | | नदी |
|---|---|---|---|---|---|
| हड़प्पा | - | रावी | मोहनजोदड़ो | - | सिंधु |
| रोपड़ | - | सतलज | कालीबंगा | - | घग्गर |
| लोथल | - | भोगवा | सुत्कागेनडोर | - | दाश्क |
| सुत्काकोह | - | शादीकौर | आलमगीरपुर | - | हिण्डन |
| रंगपुर | - | भादर | कोटदीजी | - | सिंधु |
| कुणाल | - | सरस्वती | चन्हूदड़ो | - | सिंधु |
| बनावली | - | सरस्वती | मांडा | - | चिनाब |
| भगवानपुरा | - | सरस्वती | दैमाबाद | - | प्रवरा |
| आमरी | - | सिंधु | राखीगढ़ी | - | घग्गर |

**प्रमुख धातु एवं प्राप्ति स्थल**

| कच्चा माल | स्थल |
|---|---|
| तांबा | खेतड़ी (राजस्थान) एवं बलूचिस्तान |
| लाजवर्द | बदख्शां (अफगानिस्तान) |
| फिरोजा, टिन | ईरान |
| चांदी | राजस्थान की जावर एवं अजमेर की खानों से, अफगानिस्तान एवं ईरान |
| सीसा | अफगानिस्तान |
| शिलाजीत | हिमालय |
| गोमेद | गुजरात |

- घरों की खिड़कियां और दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गली की ओर खुलते थे।
- लोथल मात्र ऐसा नगर था, जिसके घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर खुलते थे।
- सिंधु सभ्यता में मुख्य फसल **गेहूं और जौ** थे।
- रंगपुर एवं लोथल से धान की भूसी के साक्ष्य मिले हैं, जिससे धान की खेती होने का प्रमाण मिलता है।
- मेसोपोटामिया के अभिलेखों में **'मेलुहा'** शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसका आशय सिंधु सभ्यता से ही है।
- सिंधु सभ्यता वासी मातृदेवी को **'उर्वरता की देवी'** के रूप में पूजा करते थे।
- मातृदेवी पूजा, नाग पूजा, वृक्ष पूजा एवं जल पूजा के साक्ष्य भी सिंधु सभ्यता से मिलते हैं।
- **मातृदेवी की पूजा** सिंधु सभ्यता में **सर्वाधिक प्रचलित** थी।
- स्त्री मृण्मूर्तियां अधिक संख्या में मिलने के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि सैंधव समाज **मातृसत्तात्मक** था।
- **कालीबंगा** एकमात्र हड़प्पा कालीन स्थल है, जिसके **दोनों टीले रक्षा प्राचीरों** से घिरे हुए थे।
- शवों को जलाने एवं गाड़ने की प्रथाएं अंतिम संस्कार हेतु प्रचलित थीं।
- लोथल से तीन एवं कालीबंगा से एक युगल समाधियों के साक्ष्य मिले हैं।

## वैदिक संस्कृति

- सिंधु सभ्यता के पश्चात वैदिक संस्कृति का विकास हुआ।
- वैदिक काल का विभाजन दो भागों में किया जाता है-
  i. ऋग्वैदिक काल - 1500-1000 ई.पू.
  ii. उत्तर वैदिक काल - 1000 - 600 ई.पू.

### ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)

- वैदिक संस्कृति को मानने वालों को **'आर्य'** कहा जाता है।
- **'आर्य'** संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ **'श्रेष्ठ'** या **'कुलीन'** है।
- वैदिक संस्कृति **ग्रामीण** थी।
- आर्यों की भाषा **संस्कृत** थी।
- चारों वेदों को सम्मिलित रूप से 'संहिता' कहते हैं।
- वेदों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं प्राचीन ऋग्वेद है।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' कहा जाता है।
- 'वर्ण' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- ऋग्वेद में वर्ण शब्द रंग के अर्थ में तथा कहीं-कहीं व्यवसाय के चयन के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में सर्वप्रथम **'शूद्र'** शब्द मिलता है।
- यहां चारों वर्णों की उत्पत्ति एक **'विराट पुरुष'** के विभिन्न अंगों से बताई गई है।
- ऋग्वेद में ईश्वर महिमा (देवताओं की स्तुति), यजुर्वेद में कर्मकांड एवं सामवेद में संगीत का विस्तृत उल्लेख है।
- ऋग्वेद में कुल **10 मंडल** हैं।
- ऋग्वेद में कुल **1028 सूक्त** और **10552 ऋचाएं** हैं।
- पहला और दसवां मंडल नवीनतम है।
- ऋग्वेद के **तृतीय मंडल** के रचयिता विश्वामित्र हैं।
- प्रसिद्ध **गायत्री मंत्र** तृतीय मंडल में मिलता है।
- ऋग्वेद की अनेक बातें **'अवेस्ता'** से मिलती हैं। अवेस्ता पारसी धर्म का प्राचीनतम ग्रंथ है।
- ऋग्वेद में सर्वाधिक **250 सूक्त इंद्र** को तथा **200 सूक्त अग्नि** को समर्पित हैं।
- ऋग्वेद का नवां मंडल 'सोम' को समर्पित है।
- 'यज्ञ' संबंधी विधि-विधानों का उल्लेख **यजुर्वेद** में प्राप्त होता है।
- यजुर्वेद के दो भाग हैं- **शुक्ल यजुर्वेद** एवं **कृष्ण यजुर्वेद**।
- शुक्ल यजुर्वेद को **'वाजसनेयी संहिता'** भी कहा जाता है।
- शुक्ल यजुर्वेद केवल पद्य में है तथा कृष्ण यजुर्वेद पद्य एवं गद्य दोनों में है।

- यजुर्वेद का अंतिम भाग **'ईशोपनिषद'** है, जिसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से न होकर आध्यात्मिक चिंतन से है।
- सामवेद में कुल **1875 छंद** हैं, जिनमें से 75, जबकि कुछ विद्वानों के अनुसार 99 को छोड़कर शेष सभी ऋग्वेद में भी उपलब्ध हैं।
- सामवेद से ही भारतीय संगीत का जन्म हुआ।
- सामवेद की 3 मुख्य शाखाएं हैं - 1. कौमुथीय, 2. राणायनीय तथा 3. जैमिनीय।
- **अथर्ववेद** में कुल 730 सूक्त तथा 5987 मंत्र हैं। इसमें **तंत्र-मंत्र एवं वशीकरण** के संदर्भ में साक्ष्य हैं।
- आर्यों की प्रशासनिक इकाई कई भागों में विभक्त थी। ये थीं- **कुल या गृह, ग्राम, विश तथा जन**।
- ग्राम का मुखिया **'ग्रामणी'**, विश का प्रधान **'विशपति'** एवं जन का शासक **राजन** कहलाता था।
- ऋग्वैदिक काल में **पुरोहित** एवं **सेनानी** प्रमुख राज्याधिकारी थे।
- रत्नियों की संख्या **12** थी- सेनानी, पुरोहित, युवराज, महिषी, सूत, ग्रामिणी, क्षत्रि, संग्रहीता, भागदुध, अक्षवाप, पालागल और गोविकर्ता।
- **व्राजपति**, गोचर भूमि का अधिकारी होता था।
- **विदथ** आर्यों की सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी।
- **अथर्ववेद** में सभा और **समिति** को **प्रजापति की दो पुत्रियां** कहा गया है।
- **सभा वृद्ध** (श्रेष्ठ) एवं **अभिजात** (सभ्रांत) लोगों की संस्था थी।
- समिति केंद्रीय राजनीतिक संस्था (सामान्य जनता की प्रतिनिधि सभा) थी। समिति राजा की नियुक्ति, पदच्युत करने व उस पर नियंत्रण रखती थी।
- समिति के सभापति को **'ईशान'** कहा जाता था।
- ऋग्वैदिक काल में स्त्रियां सभा एवं समिति में भाग लेती थीं।
- **दाशराज्ञ युद्ध** का वर्णन **ऋग्वेद** में है। यह युद्ध **परुष्णी** (रावी) नदी के तट पर **सुदास** एवं **दस जनों के बीच** लड़ा गया, जिसमें सुदास विजयी हुआ।
- उपनिषद दर्शन पर आधारित पुस्तक है।
- उपनिषदों में प्रथम बार मोक्ष की चर्चा मिलती है।
- कठोपनिषद में यम और नचिकेता का संवाद उल्लिखित है।
- उपनिषदों में विदेह के राजा जनक, पांचाल के राजा प्रवाहणजाबालि, केकैय के राजा अश्वपति और काशी के राजा अजातशत्रु का उल्लेख प्राप्त है।

**वैदिक युगीन प्रमुख शब्दावलियां एवं अर्थ**

| क्र.सं. | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| 1. | अघन्या | वध न करने योग्य अर्थात गाय |
| 2. | उर्वरा | जुते हुए खेत |
| 3. | लांगल | हल |
| 4. | वृक | बैल |
| 5. | यव | जौ |
| 6. | गोधूम | गेहूं |
| 7. | हिरण्य या सुवर्ण | सोना |
| 8. | करीष | गोबर की खाद |
| 9. | बेकनाट | ऋण देकर ब्याज लेने वाला वर्ग |
| 10. | तन्दुल | धान |
| 11. | व्रीहि | चावल |

- **ऋग्वेद** में सर्वाधिक बार उल्लेख **सिंधु नदी** का हुआ है।
- **सरस्वती** ऋग्वैदिक आर्यों की सर्वाधिक पवित्र नदी थी।
- **सरस्वती को मातेतमा, देवीतमा** एवं **नदीतमा** कहा गया है।
- **आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ** एवं **संन्यास)** का प्रचलन **उत्तर वैदिक काल** में हुआ।
- **छांदोग्य उपनिषद** में केवल तीन आश्रमों का उल्लेख है, जबकि **जाबालोपनिषद** में सर्वप्रथम चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
- नैतिक व्यवस्था का प्रधान होने के कारण वरुण को **'ऋतस्यगोपा'** भी कहा जाता था।
- बृहस्पति को वैदिक देवताओं का पुरोहित माना गया है।
- वैदिक साहित्य में कई ऐसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने वेद मंत्रों की रचना की थी, यथा - **अपाला, घोषा, विश्ववारा, लोपामुद्रा** आदि।
- लोपामुद्रा ऋषि अगस्त्य की पत्नी थीं।
- आर्यों का समाज **पितृप्रधान** था। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार या कुल थी, जिसका मुखिया पिता होता था, जिसे **'कुलप'** कहा जाता था।
- स्त्रियों को पति के साथ यज्ञ कार्य में भाग लेने की स्वतंत्रता थी।
- बाल विवाह एवं पर्दा प्रथा का **प्रचलन नहीं** था।
- विधवा अपने मृतक पति के छोटे भाई (देवर) के साथ विवाह कर सकती थी। इसे **'नियोग प्रथा'** कहा जाता था।
- आजीवन अविवाहित रहने वाली महिलाओं को **'अमाजू'** कहा जाता था।
- पशुपालन एवं कृषि आर्यों का मुख्य व्यवसाय था।
- आर्यों का प्रिय पशु घोड़ा था।
- आर्यों के सर्वाधिक प्रिय देवता इंद्र थे।
- ऋग्वैदिक काल के लोग लोहे का प्रयोग नहीं करते थे।
- उत्तर वैदिक काल में प्रयोग की जाने वाली धातु **श्याम अयस** अथवा **कृष्ण अयस** की चर्चा मिलती है।
- लेन-देन में वस्तु **विनिमय प्रणाली** प्रचलित थी।
- व्यापार-वाणिज्य का कार्य **'पणि'** वर्ग के लोग करते थे।
- **अग्नि** की पूजा मनुष्य एवं देवता के बीच **मध्यस्थ** की भूमिका निभाने वाले देवता के रूप में की जाती थी।
- ऋग्वेद में गंगा नदी का एक बार और यमुना नदी का उल्लेख तीन बार हुआ।
- **मुंडकोपनिषद** में यज्ञ की तुलना टूटी नाव से की गई है।
- वैदिक काल में सोने के आभूषण या सिक्के को **'निष्क'** कहा जाता था।
- पुरुषमेध यज्ञ का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में है।
- 'गोत्र' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद में हुआ था।
- ऋग्वेद की मूल लिपि ब्राह्मी थी।
- जंगल की देवी को 'अरण्यानी' कहा जाता था।

**वैदिक कालीन संहिता**

| वेद | ब्राह्मण | आरण्यक | उपनिषद |
|---|---|---|---|
| 1. ऋग्वेद | ऐतरेय, कौषीतकि | ऐतरेय, कौषीतकि | ऐतरेय, कौषीतकि |
| 2. सामवेद | ताण्डय, जैमिनीय | जैमिनीय, छांदोग्यारण्यक | छांदोग्य जैमिनीय |
| 3. यजुर्वेद | तैत्तिरीय, शतपथ | तैत्तिरीय, शतपथ | वृहदारण्यक, कठोपनिषद |
| 4. अथर्ववेद | गोपथ | - | मुंडकोपनिषद, मांडुक्योपनिषद |

| ऋग्वैदिक कालीन नदियां | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| प्राचीन नाम | | आधुनिक नाम | प्राचीन नाम | | आधुनिक नाम |
| क्रुमु | - | कुर्रम | कुभा | - | काबुल |
| वितस्ता | - | झेलम | अस्किनी | - | चिनाब |
| परुष्णी | - | रावी | शतुद्रि | - | सतलज |
| विपाशा | - | व्यास | सदानीरा | - | गंडक |
| दृशद्वती | - | घग्गर | गोमती | - | गोमल |
| सुवास्तु | - | स्वात | | | |

| ऋग्वैदिक कालीन देवता | | |
|---|---|---|
| देवता | | संबंध |
| इंद्र | - | युद्ध का नेता एवं वर्षा का देवता |
| अग्नि | - | देवता एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ |
| वरुण | - | आकाश, पृथ्वी एवं सूर्य का निर्माता, समुद्र का देवता, जगत का नियंता, देवताओं का पोषक एवं ऋतु का नियामक, सत्य का प्रतीक, ऋतु परिवर्तन एवं दिन-रात का कर्ता |
| द्यौ | - | आकाश का देवता |
| सोम | - | वनस्पति देवता |
| उषा | - | प्रगति एवं उत्थान की देवी |
| अश्विन | - | विपत्तियों को हरने वाले देवता |
| पूषन | - | पशुओं का देवता |
| विष्णु | - | विश्व के संरक्षक एवं पालनकर्ता |
| मरुत | - | आंधी-तूफान का देवता |
| रुद्र | - | आसुरी शक्तियों का दमन करने वाला देवता |

## उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

- उत्तर वैदिक काल का इतिहास मुख्यतः यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद एवं ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषद ग्रंथों पर आधारित है।
- इस काल में **वर्ण जन्म के आधार पर निर्धारित** होने लगा था।
- इस काल के लोग **लोहे के हथियारों** का प्रयोग करते थे।
- इस सभ्यता का विस्तार गंगा-यमुना, दोआब तक विस्तारित हो गया था।
- **उत्तर वैदिक** काल में आजीविका का मुख्य आधार कृषि हो गया था।
- **शतपथ ब्राह्मण** में कृषि की चारों क्रियाओं - **जुताई, बुआई, कटाई** तथा **मड़ाई** का उल्लेख हुआ है।
- **काठक संहिता** में 24 बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हल का उल्लेख मिलता है।
- कृषि और विविध शिल्पों में प्रगति के कारण उत्तर वैदिक कालीन लोग स्थायी निवास बनाने लगे।
- इस काल में हल को **'शिर'** और हल रेखा को **'सीता'** कहा जाता था।
- उत्तर वैदिक काल में मुद्रा की इकाई **'निष्क'** और **'शतमान'** थीं।
- प्रजातांत्रिक संगठनों में सभा, समिति तो बनी रहीं, किंतु विदथ का अस्तित्व समाप्त हो गया।